<u>अघोर लक्ष्मी प्रत्यंगिरा मंत्रः-</u>

मंत्र-जप-फलः- श्री लक्ष्मी को आना ही होगा।

आसनः- लाल

मालाः- स्फटिक

दिशा- पश्चिम

दीपकः- शुद्ध गाय का घी

प्रसादः- फल, फूल, मिष्ठान, लाल कनेर, सूखे मेवे।

<u>विनियोग-</u>

ॐ अस्य श्री लक्ष्मी प्रत्यंगिरा महामंत्रस्य आनंद कर्दम चिक्लीत अघोरी खर्पर चतुर्ऋषयः, ब्राह्मी गायत्री छंदः, सर्व सम्पत्त प्रदात्री श्री लक्ष्मी प्रत्यंगिरा देवता, श्रिं बीजं, श्रीं शक्तिः, श्रः कीलकं, सर्व सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

<u>करन्यास-</u>

श्रिं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

श्रं मध्यमाभ्यां नमः।

श्रैं अनामिकाभ्यां नमः।

श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

श्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

DR. RUPNATHJI(DR. RUPAK NATH)

अंगन्यास-

श्रिं हृदयाय नमः।
श्रीं शिरसे स्वाहा।
श्रं शिखायै वषट्।
श्रां कवचाय हुम्।
श्रं नेत्र त्रयाय वौषट्।
श्रौं अस्त्राय फट्।

इसके उपरान्त " भूर्भुवस्वरोम्" बोलकर अपने सिर के चारो ओर क्लाक वाईज चुटकी बजाकर दिशा-बंधन करें।

ध्यान:-

DR. RUPNATHJI(DR. RUPAK NATH)

लक्ष्मीं रहस्य विद्या-बोधिनि लं-कार करा।
अवलम्ब तीजिनी निं-कार निर्लेपिनी दारि।।
दारिद्रय निर्मूलिनी देविं, प्रत्यंगिरा लक्ष्मी माता।